पाठ 19. चतुर मेढक

पाठ की भूमिका

इस पाठ का उद्‌देश्य बच्चों में विवेचनात्मक सोच संबंधी कौशल विकसित करना है ताकि वे अपने अनुभवों का सकारात्मक मूल्यांकन कर सकें। इस कहानी में छोटा-सा मेढक ताकतवर बाघ तथा चतुर सियार को अपनी बुद्‌धि के बल पर मात दे देता है। इस प्रकार, यह पाठ संदेश देता है कि साहस और बुद्‌धि के बल पर बड़ी-से-बड़ी मुसीबत का सामना आसानी से किया जा सकता है।

पाठ का सार

एक बाघ मेढक को खाना चाहता था परंतु मेढक ने मुकाबला करने की शर्त रखी। चालाकीवश मेढक मुकाबले में जीत गया। बाघ उससे डरकर भागने लगा तब रास्ते में उसे सियार मिला। दोनों आपस में पूँछें बाँधकर मेढक को ललकारने चल दिए। मेढक ने फिर से बहादुरी व बुद्‌धिमत्ता का परिचय देते हुए उन दोनों को वहाँ से भगा दिया।

अध्यापन संकेत

- **मूल पाठ के लिए संकेत**

  कहानी का सारांश बताएँ। 'प्रत्युत्पन्नमतित्व' का अर्थ समझाएँ। मेढक, बाघ व सियार के स्वभाव की विशेषता बताएँ।

  चुनौतियों का सामना करने की प्रेरणा बच्चों को दें।

- **अभ्यास प्रश्नों के लिए संकेत**
  - **मौखिक प्रश्नों, पहेलियों, पठित परिच्छेद** व **पाठ आधारित प्रश्नों** के अध्यापन संकेत हेतु **पृष्ठ संख्या 42** देखें।
  - शब्द भेद से बच्चे परिचित हैं। उन भेदों के आधार पर बच्चों को शब्द की पहचान करने के लिए कहें। इन शब्दों से वाक्य भी बनवाए जा सकते हैं।
  - मात्रा संबंधी अभ्यास कराते समय यह भी बताएँ कि मात्राओं के लगने के स्थान क्या है।
- **क्रियाकलाप के लिए संकेत**
  - बच्चों को बाघों की घटती संख्या के बारे में जानकारी दें। हो सके तो क्रियाकलाप से संबंधित नारे लिखवाएँ।